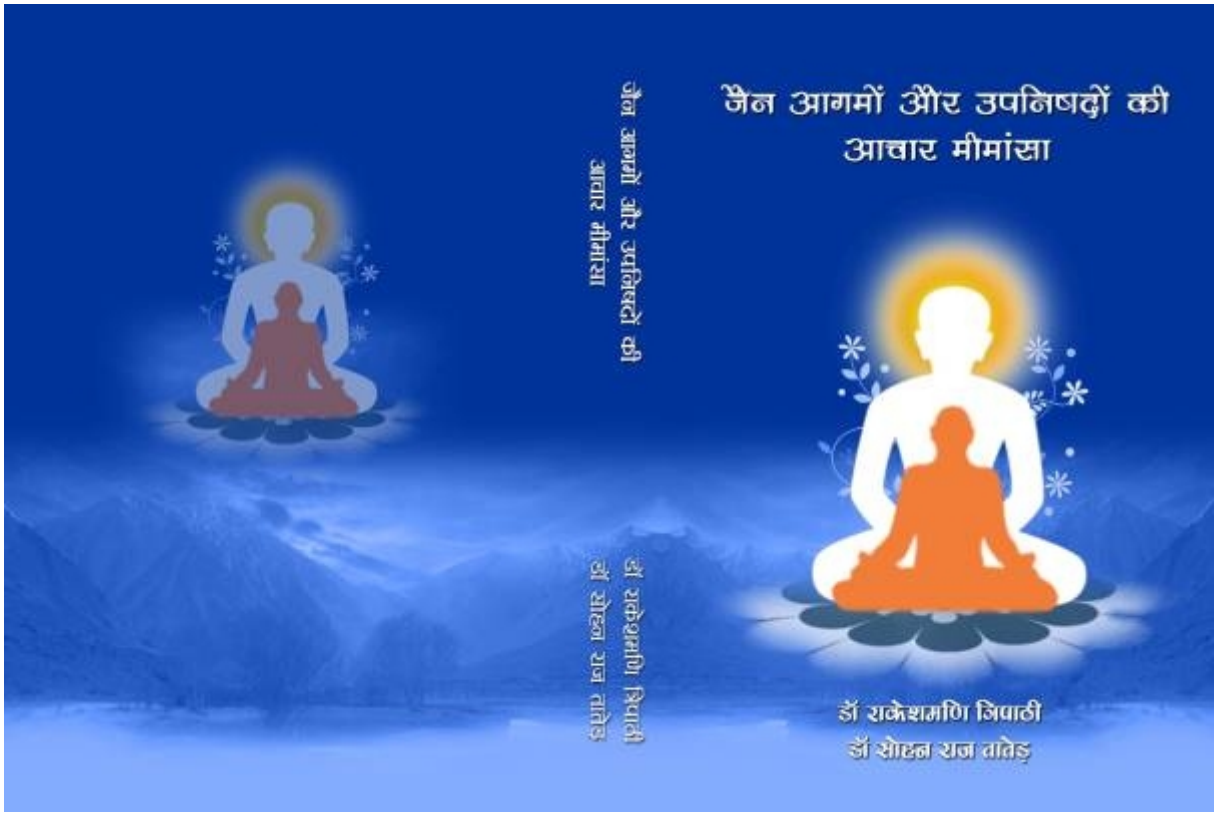

Jain Aagmo Or Upanisado Ki Aachar Mimamsa

By

Dr. Sohan Raj Tater

&

Dr. Rakesh Mani Tripathi

लेखक–परिचय

नाम	: **डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी**
जन्म तिथि	: 5 जुलाई, 1961
शैक्षणिक योग्यता	: एम.ए. (दर्शन, प्राकृत), साहित्याचार्य, पी-एच.डी.
रुचियाँ	: संस्कृत और हिन्दी की विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में लेखन कार्य, आकाशवाणी से समसामयिक विषयों का प्रसारण।
सम्मान	: **'अणव्रत शिक्षक सम्मान'** से सम्मानित।
शोध–पत्र प्रकाशित	: 15
कृतियां प्रकाशनार्थ	: जैन आगमों और उपनिषदों की आचार मीमांसा जैन कर्म मीमांसा : शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक अध्ययन
सम्पर्क सूत्र	: **डॉ. राकेशमणि त्रिपाठी** व्याख्याता, संस्कृत ब्राह्मी विद्यापीठ महाविद्यालय लाडनूँ–341306 जिला–नागौर (राज.) मो. 9982088746

पुस्तक के सम्बन्ध में

उपनिषदों और आगमों में साम्य और वैषम्य दोनों देखेने को मिलता है। आगमों में अहिंसा पर अधिक बल दिया गया है तथा उपनिषदों में ज्ञान पर। जैन और वैदिक दोनों परम्पराओं में मुक्ति को जीवन का चरम लक्ष्य माना गया है। आगमों में आचार–मीमांसा को केन्द्रीय स्थान प्राप्त है। भारतीय दर्शन के सभी सम्प्रदाय अपना स्रोत उपनिषदों में खोजते हैं। उपनिषदों और आगमों में अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह का पालन समान रूप से निर्दिष्ट है। तुलनात्मक दृष्टि से देखने पर वैदिक ग्रन्थों में संस्कारों का जितनी विशदता और प्रमुखता से वर्णन प्राप्त है, उतना आगमों में नहीं है। आत्मा और परमात्मा के साक्षात्कार का प्रमुख साधन वेदान्त में ज्ञान है, जबकि जैन दर्शन में आत्मा के परमात्मा पद को प्राप्त करने का प्रमुख साधन चारित्र है।

द्रव्य और भाव दोनों रूपों में आचरण का सम्यक् होना आवश्यक है। ज्ञान सम्पन्न होते हुए भी मानव आसक्ति के वशीभूत होकर आश्रव के माध्यम से कर्म–पुद्गलों का संचय कर इस संसार सागर में अन्तहीन यात्रा का पथिक बना हुआ है। ज्ञान से अज्ञान दूर होता है। शास्त्र प्रतिपादित ज्ञान और तदनुकूल आचरण ही श्रेष्ठ मार्ग है, जो मानव को अपने गन्तव्य तक पहुंचा सकता है। चारित्र की पृष्ठभूमि आचार ही है। आचारवान् पुरुष ही विद्वान् होता है। उपनिषदों का सारभूत ग्रन्थ गीता में कहा गया–ज्ञान रूपी अग्नि सभी कर्मों को भस्म कर देती है।

इस शोध–ग्रन्थ के माध्यम से वैदिक, सभी भारतीय दर्शनों एवं श्रमण परम्परा में समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया गया है। आशा है विद्वान्गण इस तुलनात्मक अध्ययन को स्वीकार कर हमें कृतार्थ करेंगे।